गो ग्रा स

अ. भा. कृषि गोसेवा संघ-गोपुरी-वर्धा.

अनुक्रमणिका

प्रकाशक – अखिल भारत कृषि गो-सेवा संघ, गोपुरी – वर्धा (महाराष्ट्र)
तार: सर्व सेवा, वर्धा. फोन : दफ्तर २३६५; निवास २५६३.
मुद्रक : परंधाम मुद्रणालय, पवनार (वर्धा) ४४२१११.
संपादक – राधाकृष्ण बजाज, देवेन्द्रकुमार

गोग्रास

वर्ष ३ : अंक ८ | गोपुरी, वर्धा | वार्षिक शुल्क : ६ रु.
११ जून ७९ | | प्रति अंक
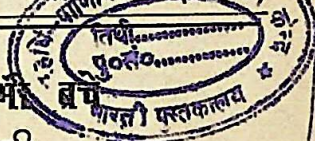
गाय भी बचे, बाबा भी बचे

माताजी को श्रद्धांजली

पूज्य माताजी का नश्वर शरीर ता. २० मई १९७९ को रात के १२.०५ बजे पंचतत्त्वमें विलीन हुआ एवं माताजी गोलोकवासी हुओ। माताजी महिनेभर से सेवाग्राम अस्पताल में थीं। अपने ही कमरे में गिर जाने को कारण उनके कूल्हेकी हड्डी टूट गयी थी। सेवाग्राम अस्पताले में बंबई के डाक्टर झुंझनुवाला ने उनका आपरेशन किया था। वहीं इलाज चालू था। उसीमें बीमारी बढी, पहली मईसे वे बेशुद्ध हो गयी थीं। इस बीमारीमें काफी तकलीफ सहनी पडी, फिर भी वे सदा प्रसन्न चित्त रही। २० दिन तक बेशुद्ध रही, चेहरे पर दु:ख के भाव नहीं आये। देहांत के बाद भी चेहरा प्रसन्न ही लगता रहा।

१९४१ में पूज्य काकाजी (जमनालालजी) व्यक्तिगत सत्याग्रह में बहुत बीमार हो गये थे। सरकार ने उन्हें स्वास्थ्यलाभ के लिये छोडा। पूज्य बापूजी का मानस रहा कि स्वास्थ्यलाभ के लिये छोडे हुओ व्यक्ति को पूर्ण स्वस्थ हुओ बिना फिर से सत्याग्रह में नहीं जाना चाहिये। बापूजी ने काकाजी से कहा कि मेरे सर्वाधिक प्रिय दो काम रहे हैं – एक, हरिजन सेवा और दूसरा, गोसेवा। हरिजन सेवा के लिये ठक्कर बापा जैसे समर्थ सेवक मिले हैं। गोसेवा का काम तुम उठा सको तो मुझे संतोष होगा। काकाजी जीवनभर यही करते आये थे, बापूजी ने काम उठाया और काकाजी ने उसे संभाला। "कृषि गोरक्ष वाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजं" गीता ने भी वैश्य के लिये गोरक्षा का सहज धर्म बताया है, अतः काकाजी ने सब तरह से विचार करके गोसेवा का कार्य उठाना स्वीकार किया।

विजयादशमी २० सितंबर १९४१ को गोसेवा संघका गोपुरी में आरंभ हुआ। काकाजी ने अध्यक्ष की जिम्मेवारी उठायी। मंत्री के लिये स्वामी आनंद का नाम सोचा गया था, लेकिन समय पर वे नहीं मिल सके, इसलिये मेरा नाम रखा गया। मैं भी अन्य कामों में व्यस्त था, पर काकाजी के आग्रहवश कुछ दिनके लिये इस कामको स्वीकार किया था। लेकिन प्रभु की इच्छा कुछ और ही थी। चार महिने बाद ही ११ फरवरी १९४२ को अचानक काकाजी का देहावसान हो गया, और मैं इसमें फँस गया।

मार्च में बापुजी ने काकाजी के मित्रमंडली की सभा वर्धा में बुलायी और गोसेवा के कार्य को आगे बढाने की योजना सोची गयी। इस योजना में गोसेवा संघ की अध्यक्ष माता जानकीदेवीजी को बनाया गया। उनकी मदद के लिए दो समर्थ उपाध्यक्ष दिये गये – पूज्य विनोबाजी और सेठ घनश्यामदासजी बिडला। मंत्री के लिये बहुत खोज हुई, लेकिन अंत में मुझे और भाई रिषभदासजी रांका को मिलजुल कर काम संभालना पडा। इस प्रसंगपर माताजी ने अपना स्त्रीधन गोसेवा के कामके लिये अर्पण किया। यह राशी प्रारंभ में दो-ढाई लाख के करीब थी, जो आगे बढकर छः सात लाख तक पहुंची। संघ कार्यालय का काम उसी राशी से चलता रहा। बापूजी के निजधाम जाने के बाद ८ जुलाई १९५० को गोसेवा संघ का सर्व सेवा संघ में विलयन हुआ। मुझे संयोजक बनाया गया। माताजी का सहयोग यथावत् चालू रहा, मार्गदर्शन पू० बाबा करते रहे।

१३ मार्च १९५९ को काकाजी के जन्मस्थान काशीका वास में पदयात्रा करते हुए बाबा पहुचे। उस पुण्यभूमि पर दो स्मरणीय कार्य हुए। पहला कार्य ब्रह्मविद्या मंदिर की स्थापना का, और दूसरा काम गोसेवा संघ की अध्यक्षता का भार स्वर्गीय श्री ढेबरभाई को सौंपा गया। भाई कमलनयन बजाज की उन्हें पूरी मदद रही। १९६८ से संघ स्वतंत्र रजिस्टर हुआ। श्रीमन्नारायणजी ने अध्यक्षता संभाली अेवं अपनी शक्ति इसमें लगायी। पूज्य माताजी का और मेरा सहयोग तो था ही, बहन मदालसा का भी सहयोग मिलने लगा।

इस बीच इमरजन्सी के दौरान बाबा ने तारीख देना है। अैलान किया कि ११ सितंबर १९७६ तक सारे देश में सुप्रीम कोर्ट के निर्णयानुसार गोहत्याबंदी कानून नहीं बनेंगे तो वे आमरण अनशण करेंगे। बाबा के उपवास

की खवर को दवाने का सरकार ने हर संभव उपाय किया, लेकिन खबर तो फैल गयी। सर्व सेवा संघ एवं कृषि गोसेवा संघ की सम्मिलित सभा हुअी। मंत्री का भार उठाने के लिये कोअी नहीं मिल पाया। ऐसी स्थिति में मैंने स्वयं ही संयोजक बनना स्वीकार किया। भाई श्रीमनजी को संकोच था उपाध्यक्ष से मंत्री कैसे बनाया जाय। लेकिन माताजी ने मेरा समर्थन किया। माताजी के चित्त में अेक विश्वास था कि गोसेवा का काम भाया ठीक कर सकेगा। ('भाया' मारवाडी में बडे भाई को कहते हैं। मदालसा, उमा मुझे 'भाया' कहती थी। उनका वह नाम इतना चला कि माताजी, ढेबरभाई, दादा, यहां तक की बाबा भी मुझे भाया कहने लगे) संयुक्त समिति का काम बढा। दूर-दूर तक बाबा के उपवास की खबर पहुंची, भारत सरकार के साथ समझौता हुआ। इस समझौते के परिणामस्वरूप पांच प्रदेशों में नये गोवधबंदी कानून बने। इन सारे कामों में माताजी का सहयोग और प्रेरणा बराबर बनी रही। श्री इंदिराजी को वे लडकी मानती थी, और इंदिराजी उनको माताजी। वे बराबर इंदिराजीं को गोवध-बंदी के लिये कहती रहती थीं।

बाबा ने बंगाल, केरल के लिये एक साल का समय दिया था। एक साल बीत गया दो साल बीत गये। तब फिर से बंगाल, केरल की गोवधबंदी का प्रश्न उठा। और ता० १ जनवरी ७९ तक केरल-बंगाल में गोवधबंदी कानून न बने तो बाबा ने अपने उपवास का संकल्प दोहराया। कार्यकर्ताओं के आग्रहपर १११ दिनका समय बढाया गया। अनेक प्रयत्नोंके बावजूद भी बाबा का उपवास २२ अप्रैल १९७९ को आरंभ हो ही गया।

जब से बाबा ने दुबारा उपवास का ऐलान किया तब से माताजी बहुत ही चिंतित रहने लगी। उनके चित्त में जितनी गहरी चिंता थी उतनी दादा को छोड शायद ही किसीको रही हो। मेरा जब भी माताजी से मिलना होता, चाहे बीमारी में हो चाहे साधारण स्थिति में, वे सदा एक ही बात कहती थीं:— भाया, गाय भी बचनी चाहिये और बाबा भी बचने चाहिये। पिछले छ: महिनों में माताजी के मुंह से दूसरी बात सुनी नहीं। एक ही मंत्र, एक ही चिंतन और एक ही ध्यान कि गाय भी बचे और बाबा भी बचे। हम लोगों में कई ऐसे थे जिनका चिंतन चलता था, गाय बचे न बचे, बाबा बचने चाहिये। अच्छे-अच्छे साथीयोंकी निष्ठा हिल गयी थी। लेकिन माताजी की गायके प्रति निष्ठा दृढ थी। उन्होंने सदा ही गाय बचाने की बात प्रथम कही।

इन दिनों माताजी के अेकमात्र श्रद्धास्थान अेवं आधार बाबा थे ।
माताजी से परिचित सभी जानते हैं, माताजी मृत्यु का नाम भी नहीं सुनना चाहती थीं । जरा-जरासी तकलीफों को बरदास्त करना मुश्किल होता था । चित्त में कुछ-न-कुछ अशान्ति बनी ही रहती थी । लेकिन मैंने देखा कि भाई कमलनयन के देहवसान का इतना गहरा धक्का लगा कि उनका सारा जीवन ही परिवर्तन हो गया । पू० काकाजी का धक्का बहुत भारी था, पर पू० बापुजी के पितृवात्सल्य ने संभाला । पू० बापूजी भी गये । उस धक्के को भाई कमलनयन ने संभाला । जब वह भी गया तब माताजी को वज्रपातसा धक्का लगा । उनको भरोसा हो गया कि यह सारा संसार असार है, चित्त में वैराग्य प्रकट हुआ । सारे परिवार की आशा छोडकर बाबा की शरण पकडी । उस दिन से मैं देख रहा हूं कि माताजी का स्वभाव बदल गया । चित्त में प्रसन्नता खेलने लगी, सुख-दुःख को समान समझने लगी । यहां तक की श्रीमन्नारायणजी जाने का पहाड-सा दुख सहज सह गई और बहन मदालसा को संभाला ।

पिछले २ साल में अनेक बिमारियाँ उन्होंने सही है । डाक्टरी उपचार को यातनाएं सही हैं, लेकिन कभी उफ तक नहीं किया, कभी चित्त पर दुःख की छटा नहीं देखी । सदा प्रसन्नवदन, एक ही ध्यान बाबा का । हंसना-खेलना, नाचना-कूदना, झगडना, सब बाबा के साथ । उनके लिए इन दिनों बाहर-भीतर बाबा ही बाबा समाये थे ।

मनुष्य की परीक्षा संकट के समय ही होती है । पू. बाबा के उपवास को संकटभरी घडी में माताजी ने सदा विवेक कायम रखा । जब भी बोलती थी – गाय भी बचे, बाबा भी बचे कहती थी । गाय बचने की बात पहले और बाबा बचने की बात बाद में कहती थी । अंत तक इस विवेक को छोंडा नहीं । माताजी का मनोरथ भगवान ने सफल किया । जिस दिन बाबा के उपवास छूटने की तथा केन्द्रीय गोवधबंदी कानून बनने के आश्वासन की बात सुनी, उनके अपार आनंद का कोई ठिकाना नहीं रहा ।

भगवान के बनाये रिश्ते के अनुसार माताजी मेरी चाची थी । मैं जमनालालजी का भतीजा याने बड भाई का लडका । ६ साल की उम्र में पिताजी का देहान्त हो गया था, उनका कोई स्मरण भी नहीं । मैंने तो पिता, जमनालालजी को ही देखा । इन्हींके पास रहा, पढा, लिखा, काम किया । इन्हें ही काकाजी (पिताजी) कहा । मेरी माताजी जीवित थी, इसलिए

माताजी को चाचीजी कहता था। लेकिन घर में खान-पान, रहन-सहन सबमें मा का स्थान चाचीजी का ही रहा। चाचीजी का मुझपर कुछ बातों में भारी विश्वास रहा। काकाजी के साथ उनका कभी मतभेद होता था तो काकाजी मुझे बीच में डालते थे, कहते थे तेरी चाची मेरी बात नहीं मानती, तुम्हारी मानेगी। चाचीजी को विश्वास था कि मैं काकाजी की बातों में न आकर सही बात कहूंगा। दूसरा विश्वास बिमारी में सेवा का था। आनंद के समय भले ही मेरा स्मरण कम होता हो, लेकिन तकलीफ, बिमारी में मेरा स्मरण अवश्य करती थी। उनका यह विश्वास अंत तक रहा। डाक्टरों की कोई दवा वे नहीं लेना चाहती थी तो उन्हें कहा जाता कि भाया ने लेने के लिए कहा है, तो तुरंत लेती थी। भाया सामने आकर केवल खडा हो जाय तो उन्हें समाधान होता था। इतना उनका स्नेह और विश्वास था।

तीसरा विश्वास था गोसेवा के काम के बारे में। मुझे अनेक वर्षों तक प्रकाशन विभाग तथा अन्य काम करने पडे, उस समय भी माताजी बराबर बाबा से झगडती रहती थी कि भाया को क्या काम दिया है? किताबों का काम तो दूसरा भी कर लेगा, भाया को तो गाय का ही काम करने दो। पू. बापुजी ने गोसेवा का काम आरंभ किया, काकाजी, विनोबाजी, श्रीमन्नारायणजी, कमलनयन और माताजी ने उसे अपनाया। इसलिए गोसेवा के कार्य में नई प्रेरणा मिलती रही और मिलती रहेगी। भूत-भविष्य की ज्ञाता संत रैहाना बहन ने एक बार कहा भी था कि बापुजी, काकाजी, विनोबाजी मुझसे गोसेवा का काम लेना चाहते हैं और तीनो सदा मेरी मदद में रहते हैं। मेरे नित्य जीवन में तीनों की उपस्थिति का अनेक बार अनुभव भी आता है। अब तो गाय भी बचे, बाबा भी बचे यह मंत्र कानों में चौबीसों घंटे गूंजता रहता है। मैं देखता हूं भाई रामकृष्ण, बहन मदालसा और चि. गौतम तीनों की गोसेवा में रुचि है और तीनों इस काम को आगे बढाते रहेंगे अैसा विश्वास है। काकाजी और माताजी के लिए सच्ची श्रद्धांजली यही है कि उनके प्रियतम गोसेवा कार्य को अहंतारहित होकर आगे बढाने की हर संभव कोशिश करते रहें। प्रभु उसके लिए हमें शक्ति और भक्ति दे।

गोपुरी-वर्धा
१-६-७९

राधाकृष्ण बजाज

लोकसभा में संविधान संशोधन विधेयक

डॉ. रामजी सिंह

अभी दिन के लगभग तीन बजे तीन घंटे के कठोर संघर्ष, वाद-विवाद, आरोप-प्रत्यारोप के पश्चात् आखिर सरकार द्वारा प्रस्तुत संविधान के पच्चीसवें संशोधन विधेयक को लोकसभा में पुर:स्थापित करने की अनुमति मिल गई। सामान्यत: किसी विधेयक को प्रस्तुत करते समय विरोध नहीं किया जाता। लेकिन इसमें जितना विरोध हुआ आज तक मैंने किसी विधेयक को पुर:स्थापित करने के संबंध में नहीं देखा था। विरोध करनेवालों में सबसे ज्यादा मुखर और प्रखर मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के लोगों ने तो अपना धीरज ही खो दिया, जिसके लिये पीठासीन उपाध्यक्ष की ओर से काफी कुछ उन्हें सुनना भी पडा। श्री ज्योतिर्मय बसु तो बीच-बीच में हमेशा बोलते रहे और अंत में जब देखा कि यह पारित हो जायगा तो उन्होने इस विधेयक के दो टुकडे भरी सभा में कर डाले। कांग्रेस के श्री सौगतराय, श्री उन्नीकृष्णन तथा श्री वायलार रवि ने यह कहते हुए विधेयक उपस्थित करने का विरोध किया कि उनकी पार्टी इतनी जनतांत्रिक है कि इस प्रश्न पर स्वविवेक की स्वतंत्रता है। जनता पक्ष के श्री मधु लिमये शायद ५-६ महीनों के बाद पहली बार संसद में बोलने आये और इसका तीव्र विरोध किया। जनता पक्ष के लोग इसके समर्थन में नहीं बोल सकते थे, क्योंकि विधेयक उपस्थित करने के समय केवल विरोध करने वालों को ही बोलने की आज्ञा दी जाती है। बडी मुश्किल से श्री कंवरलाल गुप्त को ४-५ मिनट का समय दिया गया। मुस्लिम लीग के श्री बनातवाला साहब का विरोध स्वाभाविक ही था। फारवर्ड ब्लॉक के श्री चित्त बसु, अन्ना द्रमुक के श्री बाला पजनौर और रिपब्लिक पार्टी के श्री गवई आदि ने भी विरोध किया। जनता पक्ष के लोगों ने विरोध तो नहीं किया, लेकिन कुछ लोग अवश्य ही बातचीत में आलोचना कर रहे थे। जो भी हो, जब विभाजन की घंटी बजी और स्वयं प्रधान मंत्री उपस्थित हुए तो विधेयक पुर:स्थापित करने की अनुमति बहुमत से मिल गई। सबसे खुशी की बात है कि जब कांग्रेस के तीन युवक इसका विरोध कर रहे थे तो दूसरी ओर धीरज के साथ हिमालय के समान अचल होकर श्री यशवन्तराव चव्हाण और डा० कर्णसिंह बैठे रहे और उन्होंने प्रस्ताव पारित करने के पक्ष में मत दिया। लेकिन यह भी एक दु:खद आश्चर्य कि प्रस्ताव के ऊपर जब मत लिया जाने लगा तो इंदिरा कांग्रेस की बेन्च

बिल्कुल खाली थी। न तो स्टीफन साहब थे और न साठे साहब मत के समय आये। शुरू में बहस जब शुरू हुई थी तो दोनों उपस्थित थे, लेकिन उसके बाद धीरे-धीरे सब चले गये थे। खैर, प्रधान मंत्रीजी ने जो वचन दिया था, उसके अनुसार उन्होंने प्रथम चरण तो पूरा किया। अब अगले महीनों में बडी मेहनत के साथ एक-एक व्यक्ति के सामने, एक-एक सांसद के समक्ष और देश के समक्ष इस सवाल को ले जाना होगा और इसके आर्थिक पक्ष को उजागर करना होगा। (दि. १८-५-७९ के पत्र से)

आत्माकी आवाज कभी धोखा नहीं दे सकती

भादरिया महाराज (जेसलमेर)

गोसेवा संघ के क्षेत्र में आदर्श को छूने कें लिए हमें कदम-कदम आगे बढना है, सफलता-असफलता ईश्वराधीन है। लेकिन घोषणा हमें उसी बातकी करनी है, जिसमें हमारी आत्मा हमें साथ देती हो। आत्माकी आवाज ईश्वरका ही हुकूम है, जिसे माननेवाला फेल तो कभी हो नहीं सकता।

जिन लोगोंकी कथनी और करनीमें अन्तर है, अर्थात जो लोग दूसरोंकी आंखोंमें धूल झोंकना पसंद करते हैं, उनको राय देने के लिए उनकी आत्मा सर्वथा मौन हो जाती है। आत्मा की बिना इजाजत अथवा उसकी आज्ञा का उल्लंघन करके जो आगे कदम बढाते हैं, निश्चित तौरसे उनकी सफलता की मुसाफरी में अगले कदमों पर गहरा गड्ढा है।

मैंने अपने पिछले जीवनका अेक बहुत बडा भाग स्वयं ही काली करतूतोंसे बरबाद कर लिया है। लेकिन अब बहुत देरसे जाकर उस अज्ञात शक्तिकी आवाजकी कद्र करना पसंद किया है। जबसे मैं अपनी आत्माकी इज्जत करता हूं तबसे दृढ विश्वास रखता हूं कि वह आदेश-पालकोंको किसी भी सूरत में धोखा नहीं दे सकती।

शारीरिक परिश्रमके पसीनेसे प्रतिदिन कमीज भिगोनेकी जितनी आवश्यकता है, उससे अधिक मनकी बिखरी हुयी शक्तियों को केन्द्रित करके, दिमागकी पूरी ताकतके साथ सफलताके

आखिरी छोरको छूनेकी जरूरत है। अच्छी सेवा और उत्तरोत्तर दूधकी वृद्धिवाली गायोंके बछडोंसे बने साँडोंके माध्यम से मूल नसलको कायम रखकर, अगर राठीको जर्सीसे आगे वढा सके तो सचमुच गायकी आशीश पर दुनिया हमें पूजेगी, और स्वर्गके देवता भी आगे बढकर हमारा सम्मान करेंगे। मनुष्यमें अेक छुपी हुअी ताकत है, जो असंभवको संभव बना सकती है, बशर्ते कि हृदय के बीचों बीच छिपे हुए अज्ञात शक्ति के उस अथाह खजानेके सदुपयोगी कला हम सीख जावें।

वालीबालकी टीमें विदेशोंको हरानेके लिये जाती हैं, लेकिन गोसंघ की टीमने अगर जर्सीकी महिमा करनेवाले विशेषज्ञों को हरा दिया तो, सचमुच दुनिया हमपर न्योछावर हो जावेगी। उस समय संघको पैसोंका रोना नहीं होगा। संघके आफीसमें मायाकी नदी बहकर आयेगी, बल्कि पैसेवालों, को हमें कहना होगा कि फिलहाल अपनी थैली में अपने पास संभालकर रखें, जरूरत पडेगी तब मंगा लेंगे। आगे बढनेसे पूर्व हमें अपने आपको सुधारनेकी जरूरत है। जिसने अपने आपको जडमूलसे सुधार लिया तो, मान लें कि उसने सफलता और असफलताके बीचवाले अवरोधके परदेको फाडकर सफलताके मैदान में प्रवेश कर लिया।

कथनी और करनीको अेक रखनेवाले कथित महामानव जहां भी जायेंगे वहां सफलता उनके सम्मानमें आगे बढकर उन्हें फूलोंका हार पहनायेगी। भाई व भतीजेवादसे बचकर करनी और कथनीको अेक रखनेवाले महापुरुषोंको किरायेवाले घटोंके नामपर सफलता को बुलवानेकी जरूरत नहीं है। सफलता उनकी धर्मपत्नी बनेगी और वह छायाकी तरह तबतक साथ रहना पसंद करेगी जबतक की हम अपनी आत्माकी आखोंमे धूल झोंकनेसे बचे रहेंगे। अपनी आत्माकी हत्या अपने ही हाथोंसे करनेकी जिस दिन हममें कुबुद्धि आयेगी ठीक उसी दिन सफलता भी हमें तलाक देकर चली जायेगी। बेशक सूरज डूबनें के बाद आकाशका संचित प्रकाश थोडी देर उजाला रख सके, लेकिन निश्चित है कि आत्माके घायल होते ही हमारे जीवनमें अंधेरा आयेगा।

(श्री. ब्रह्मदत्तजी को २२-१२-७३ को लिखे पत्र से)

बापू आपको चैनसे नहीं बैठने देंगे

तीसरी शक्ति खडी कीजिये

पूज्य बाबा,

आपकी तबियत कैसी है? मेरा ख्याल है कि पांच दिन के इस उपवास से आपके पेट के अलसर पर भी आरोग्यकारक असर पडा होगा। दूध और शहद के अलावा फल लेने की क्षमता भी आपके मेदे में अब शायद आयेगी। जब आपने क्षेत्र-संन्यास लिया और सब तरह की मुक्ति की घोषणा कर दी तो सच मानिये कि मुझे वह अनधिकार चेष्टा लगी। क्योंकि मेरा विश्वास रहा है कि आपके अन्दर के बापू आपको मुक्ति नहीं देंगे। उन्होंने ही आपसे यह उपवास कराया है और उसके निमित्त राष्ट्र-निर्माण की एक बुनियाद डलवायी है। और आगे इससे भी ज्यादा बलवान काम वह आपसे लेनेवाला है, ताकि देश में ऐसी नैतिक शक्ति खडी हो जाय कि हमारे राजनैतिक नेता होश में रहे और अपने आचरण ठीक रखे। आज तो उन्होंने सबसे भयानक असामाजिक तत्व का रूप ले रखा है और हर क्षेत्र में अपने स्वार्थ के लिये दखलन्दाजी कर रहे हैं। इसी वजह से महंगाई बढ रही है, रिश्वत का बोलबाला है, पंजाब में पुलिस विद्रोह कर रही है और देश का ढांचा लड़खड़ा रहा है। जिसे आपने चांडिल में तीसरी शक्ति कहा था उसको खडे करने का काम बहुत बाकी है और इसे आपके अलावा कोई दूसरा नहीं कर सकता।

इलाहाबाद, १४।५।७९ सुरेशरामभाई

मानव रक्षा के लिए गोरक्षा

संस्कृति की रक्षा बिना मानव विकास असंभव

(केरल के मुख्यमंत्री के नाम खुला पत्र)

मान्यवर महोदय,

आपका ता० १०-५-७९ का पू० विनोबाजी के नाम का तपसीलवार पत्र मिला। आपने बिना संकोच अपने पूरे विचार स्पष्ट शब्दों में लिख दिये, धन्यवाद। पत्र से स्पष्ट है कि आप विचार-विनिमय के लिये तैयार हैं। विचारों के आदान-प्रदान के लिये मन खुला रखा है। केवल अधिकार के बल पर निर्णय नहीं करना चाहते।

(१) मानव विकास

दुनिया का इतिहास देखेंगे तो ध्यान में आयेगा कि समाज का विकास या पतन मुख्यतया उसकी संस्कृति के आधार पर हुआ है। मानव का अर्थ भी यही है कि मननप्रधान। मानव की विशेषता इसी में है कि मनुष्य अपने भले-बुरे का सोच सकता है। उसमें विचार-शक्ति है, जो पशु में दिखाई नहीं देती। मन एव हि मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः। मन ही मनुष्यों के बंधन या मुक्ति का कारण है। शिक्षा भी वास्तव में वही सच्ची है, जिसमें मन-बुद्धि की उन्नति हो। राष्ट्र का विकास मन और हृदय की उन्नति पर ही आधारित है। तन की रक्षा आवश्यक है, उसके बिना मानव जीवित नहीं रह सकता। इसलिये तन-रक्षण की योजना होनी चाहिये। लेकिन राष्ट्र का विकास मन के विकास पर अवलंबित है, इसे कोई भुला नहीं सकता। मन के विकास की जो योजना है उसीको संस्कृति कहा है, जिससे समाज में सद्गुणों की वृद्धि हो। धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः। धारणात धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते जगत्। इन वचनों में धर्म शब्द नैतिक गुणों का वाचक है, किसी विशिष्ट

धर्म याने संप्रदाय से संबंधित नहीं। इस तथ्य को आप स्वीकार करते हो तो आपका हमारा सहचिंतन हो सकता है। मिलजुलकर कोई सर्वसम्मत मार्ग निकाल सकते हैं।

(२) मानव समाज के लिये

केवल प्राचीन धर्मग्रंथों में कहा है इसलिये गाय की रक्षा करो, गाय को तिलक लगावो आदि धर्म के नाम पर होनेवाली रूढियों को हम सही नहीं मानते। गायें सडकों पर फिरती रहे, उन्हें खाना न दे, लोगों के खेतों में छोड दे, भूख से मरती रहे, यह सारा धर्म के नामपर होनेवाला पापाचार है। हम इसके समर्थक हो ही नहीं सकते। लेकिन इसमें जो सत्यांश है, उसे ग्रहण करना जरूरी है।

एक बात प्राचीन परंपरा की ध्यान में रखने लायक है कि जिस कार्य को वे मनुष्य की भौतिक रक्षा के लिये, स्वार्थ के लिये, देश के भले के लिये आवश्यक समझते थे उस प्रक्रिया को वे धार्मिक विधि में स्थान दे देते थे। जैसे उपवास, व्रत, संक्रांति, गोरक्षा, स्नान, पाठपूजा, तीर्थव्रत, दान-धर्म ये सारी प्रक्रियाएं मनुष्य-जीवन के लिये अनेक दृष्टिसे लाभदायी है। इसलिए उनको धार्मिक विधि में स्थान मिला है। उस समय छापाखाना, किताबों की सुविधा नहीं थी। इसलिये पाठ कराना और धर्म में स्थान देना जरूरी था, ताकि वंश परंपरागत आचार चलता रहे।

पू० महात्मा गांधीजी ने कहा था कि सारे मानव समाज के लिये, सारी दुनिया के लिये गोरक्षा का विचार हिंदुधर्म की देन है। बापूजी ने कितने गहरे अर्थ में यह कहा होगा, बताना कठिन है। लेकिन उसमें एक बात निहित है कि जिस पशु से हमने जीवन भर सेवा ली हो वह निर्बल हो जाय और उसे सेवा की जरूरत पडे उस समय उसकी सेवा करना यह मानवधर्म है। इसमें प्रत्युपकार की भावना का विकास होगा और कृतज्ञता का सद्‌गुण फैलेगा। यदि

जीवनभर सेवा लेते रहे और उसकी सेवा करने की शक्ति कम हो जाय तो उसकी कतल कर दें यह कृतघ्नता है। जिस समाज में कृतघ्नता का भाव फैलेगा, वह भाव केवल गायतक सीमित न रहकर मानवों में भी फैलेगा और अंत में मनुष्य समाज का विनाश करेगा।

कहते हैं, हजारों वर्ष पूर्व जब लोग जंगलों में रहते थे, ऋषि-मुनि भी गोमांस खाते थे। लेकिन हजारों वर्षों के अनुभव के बाद उन्हीं ऋषि-मुनियों ने तय किया था कि गाय को अवध्य माना जाय, उसका मांस न खाया जाय। गोहत्यारे को प्राणदंड दिया जाय, गोहत्या को महापातक माना जाय आदि। गोरक्षा के लिये अर्जुन ने १२ साल का वनवास सहा। राजा दिलीप ने नंदिनी गौ की रक्षा के लिये शेर को अपना मांस देना कबूल किया। क्या हजारों वर्षों के इन अनुभवों को हम भुला देना चाहते हैं? मुसलमानी काल में भी गोवधबंदी रही है।

(३) नई संस्कृति का निर्माण और कम्युनिस्ट पार्टी

कम्युनिस्ट पार्टियां संप्रदाय आधारित भेदभावों को न मानकर पूरे समाज को एक मानती हैं, देश के छोटे-बडे सब मानवों के विकास की चिंता करती हैं, गरीब-अमीर का भेद मिटाना चाहती हैं, अेवं सबको समानता की भूमिका पर लाना चाहती है। पार्टी के इस सद्‌गुणों का स्वीकार करनेमें किसीको भी कोई संकोच नहीं हो सकता। लेकिन प्रत्यक्ष में जो स्थिति है उससे दीखता है कि कम्युनिस्ट पार्टी इस देश में शराब चलने देना चाहती है, गोहत्या का समर्थन करती है। भारत की अखंडता, भारतीय संस्कृति अेवं भारतीय मूल्यों को, कायम रखने की चिंता नहीं करती, और पश्चिमी हवा को लाने की कोशिश करती है। इससे देश बचेगा या मरेगा? इस बारे में गंभीरता से विचार होने की जरूरत है।

यदि सचमुच ही कम्युनिस्ट पार्टी इस देश का भला चाहती हो तो उसे देश के निर्भय, निष्पक्ष, निर्वैर और त्यागी तपस्वी

सज्जनों की राय से देश का मानचित्र तैयार करना चाहिये और उसके अनुसार कार्य करने में अपने पक्ष की पूरी शक्ति लगानी चाहिये। तभी इस देश का भला हो सकता है और लोकशाही कायम रह सकती है। क्या सबको बुलाकर राय लेने की आपकी तैयार है? या पार्टी अपने ही विचार पूरे देश पर थोपना चाहती है।

हम आशा करते हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी गहराई से चिंतन करके अैसा कोई रास्ता निकालेगी, ताकि पूरे देश का विकास हो, सारा मानव समाज एक हो, आपस का मेलजोल बढे, अंतिम मनुष्य को भी खाना, कपडा, निवास नसीब हो अेवं सब साथ बैठकर देश का मानचित्र बना सके।

(४) मानव-रक्षा के लिये गोरक्षा

यह जो सवाल पूछा जाता है कि गाय की रक्षा करे या आदमी की? गाय को खाना देवें या मनुष्य को? उन्हें समझना चाहिये कि मानव-रक्षा के लिये ही गोरक्षा है, क्योंकि गाय हमें निम्न बातें देती हैं——

(अ) घास, फूस, डंठल और (सेल्युलोज) खाकर उसका उत्तम दूध-घी बना देने की शक्ति गाय में ही है। गाय केपेट में ४ खंड होते हैं। उनकी ग्रंथियों से निकलनेवाले रसों में अेवं खंडों में पाये जानेवाले सूक्ष्म जिवाणुओं में यह शक्ति होती है कि शर्करा जाती संगठकों को अॅसिटिक अॅसीड में बदलकर उससे सुदीर्घ फेटी अॅसीड याने दूध-घी के रूप में बना देती है। यह शक्ति गाय के अलावा अन्य प्राणियों में कम है।

१ एकड जमीन के उत्पादन में से प्राणीज प्रोटीन मनुष्य को देना हो तो दूध, मांस और अंडे के द्वारा किस प्राणी से कितना मिल सकता है, इसका पूरा तख्ता अलग से दिया है। यहां थोडा देते हैं ——

	दूधसे	अंडेसे	मटन (बकरी मांस)	गोमांससे
१. भोज्य (पौंड में)	२११९०	१०३	११३	१२५
२. फॅट (ग्राम)	७८	२४	१५	३
३. प्रोटीन ,,	७२	२४	२१	२७-५
४. केलरीज –	७११,७५०	१३२,१९२	१३७,२९५	१३०,०००
५. मनुष्य ३००० केलरी	२३७	४४	४६	४३

ऊपर के आंकडों से साफ है कि १ अेकड जमीन में से दूध के द्वारा पांच गुने मनुष्यों को पोषण मिल सकता है। ये अंक अमेरिकन सरकार के १९४८ के प्रयोगों पर से लिये गये हैं।

(आ) गाय अपनी खुराक में अन्नधान्य एवं खनीज तत्व कम-से-कम लेकर भी मनुष्य को पोषण दे सकती है। बकरी पत्तियां खाती हैं। लेकिन वह कडवा, पोवाल, तूडी नहीं खा सकती। सुवर और मुर्गीको तो अन्नधान्य, बोनमिल सेबनी खुराक ही देनी पडती है। मनुष्य में और गाय में स्पर्धा नहीं है। क्योंकि अनाज मनुष्य खाता है और उससे बचा रफेज गाय खाती है, जब कि अन्य प्राणियों को ऐसी खुराक अधिक देनी पडती है, जो मनुष्य की खुराक है।

(अि) जमीन की उपजाऊ शक्ति तभी कायम रह सकती है जब फसल के रूप में उससे लिये तत्त्वों को खाद के द्वारा वापिस पहुंचाया जाय। यदि ऐसा नहीं कर सकेंगे तो भूमि की ऊर्वरा शक्ति कम होती जायेगी और एक दिन देश विनाश के गर्त में पहुंचेगा। गाय में यह शक्ति है कि वह अपने गोबर-गोमूत्र द्वारा जमीन को अधिक ही पहुंचाती है, जितना वह अपने लिये लेती है। विशेषज्ञों का कहना है कि गाय जितनी जमीन का चारा खाती है, उतनी जमीन में उसका गोबर-

गोमूत्र का खाद दिया जाय तो वह जमीन चौगुना-आठगुना चारा दे सकती है, जब अन्य प्राणी जमीन से जितना लेते हैं उतना भी वापिस नहीं पहुंचा सकते ।

(औ) खेती उत्पादन के लिये बैल-शक्ति

आज खेती उत्पादन में मुख्य जोत-शक्ति बैलों की लगती है। ट्रॅक्टर से २० % से अधिक खेती आज नहीं हो रही है। ट्रॅक्टर के तेल के लिये विदेशों पर अवलंबित रहना होगा, ट्रॅक्टर गोबर भी नहीं देता। गोबर का महत्त्व आज दुनिया समझने लगी है। जापान गोबर के लिये गायें रखने लगा हैं। गोबर से ऊर्जा मिलती है।

(अ) ६० करोड मनुष्यों के लिये खाना देना कृषि-गोपालन का ही काम है। कृषि और गोपालन दोनों भारत में अभिन्न है। दोनों अेक-दूसरे के पूरक हैं। गाय को खाना, खेती से मिलता है और खेती को खाना (खाद) गाय देती है। भारत के अंतिम मनुष्य को रोजीरोटी भी कृषि-गोपालन से ही मिल सकती है। केवल खेती और गाय के साथ खेती याने मिक्स फार्मिग करने पर खेती की ऊपज तथा दूध मिलाकर किसान को दूना लाभ होता है अैसा मिक्स फार्मिग का अनुभव है।

(५) बूढी गायों का प्रश्न

गाय की आर्थिक उपादेयता स्पष्ट है। फिर भी बूढी होने पर उपादेयता संभव नहीं। केवल गोबर गोमूत्र देती रहेगी। गोबर और गोमूत्र से भी काफी आमदनी हो सकती है। फिर भी यह मानकर चलना चाहिये कि बूढी गायों के संरक्षण का प्रश्न मानवता एवं भारतीय संस्कृति का प्रश्न है और इसके लिये गाय की अपनी जनमभर की कमाई में से दस-पांच प्रतिशत कमाई वापिस लौटाने की हमारी तैयारी होनी चाहिये। गोहत्या बंद करनेवालों को परिणाम स्वरूप होनेवाले भार को भी सहने की तैयारी होनी चाहिये।

अन्वेषण शक्ति और अक्ल चलाकर बूढ़ी गायों का भार जितना कम कर सके करने की कोशिश करें। श्री अरविंदभाई मफतलाल जैसे अनुभवी पुरुष कहते हैं कि केवल गोबर के मूल्य से गाय की पूरी खुराक निकल सकती है। यह खुशी की बात है, उनका प्रयोग सफल हो ऐसी शुभ कामना करें।

(६) व्यक्ति का विचार समूह पर कौन लाद रहे हैं ? आप या हम ?

आपने कहा है कि एक व्यक्ति का विचार समूह पर नहीं लादा जाना चाहिये। विनोबाजी जैसों का काम होना चाहिये कि वे पहले जनमत तैयार करें और बाद में कानून बनवायें। आपकी इस बात को सही मानते हुए, आपसे पूछना चाहते हैं कि भारत की ९० प्रतिशत जनता गोरक्षा के विचार को मानती है, इसमें आपको कोई शंका है क्या ? लाखों आदमियों ने दिल्ली में गोरक्षा के लिये प्रदर्शन किया था, इसे आप जानते होंगे। गोरक्षा के लिये करोडों लोगों के हस्ताक्षर सरकार के पास पहुंचे हैं। इतने हस्ताक्षर आज तक किसी विषय के समर्थन में नहीं आये। भारत के १८ प्रदेशों में से १६ प्रदेशों में गोवधबंदी कानून बन चुके हैं। वैसे ही कानून बंगाल और केरल में बनाने की मांग करना क्या एक व्यक्ति की बहुमती पर जबरदस्ती है ? या केवल दो प्रदेश पूरे राष्ट्र की अवहेलना करने पर तुले हैं ? १० प्रतिशत लोग ९० प्रतिशत पर अपना मत थोपना चाहते हैं। विनोबाजी का विचार तो ९० प्रतिशत का विचार है। लेकिन आप लोग, जो बहुत थोडे हैं, सारे देश पर अपना विचार लादने की कोशिश करें यह उचित है क्या ?

(७) गोरक्षा केन्द्रीय विषय क्यों ?

कितने विषय प्रदेशों के पास रहें और कितने केन्द्र में रहें इस संबंध में खींचातानी चल रही है। इसका निर्णय खींचातानी के आधार पर न होकर वास्तविकता के आधार पर होना चाहिये।

जैसे—सुरक्षा, रेल्वे, पोस्ट, आदि विषयों को सभी मानते हैं कि ये केन्द्र के विषय हैं, क्योंकि इनमें सारे राष्ट्र में एक नीति से काम करने की आवश्यकता रहती है। उसी प्रकार गोरक्षा एवं भारतीय संस्कृति की रक्षा का प्रश्न भी केन्द्रीय विषय है, ।

गोपालन का विषय प्रदेश का विषय रह सकता है। विभिन्न परिस्थिति के अनुसार हर जिले में भी गोपालन के भिन्न तरीके हो सकते हैं। लेकिन गोरक्षा की नीति तो पूरे देश में समान होनी चाहिये। इसलिये गोरक्षा के विषय को कांकरंट सूचि में लेना किसी भी दृष्टि से प्रदेशों के अधिकार को छीनना नहीं है, वल्कि केन्द्र अपना कर्तव्य ही निभा रहा है, जो उसे बहुत पहले निभाना चाहिये था ।

(८) भुलावा देना छोड़ें, वचन पालें

केरल और बंगाल सरकारें दलील देती हैं कि बूढी गायों का उनके प्रदेशों पर भार पडेगा, जब ९० प्रतिशत गायें उपयोगी कट रही हैं। यह दलील देना धोखा देना नहीं है क्या? आप लोगों ने विनोबाजी के सामने कबूल किया था कि अन्य प्रदेशों की गायें हमारे यहां आकर न कटें, यह ठीक है। आपने यह भी स्वीकार किया था कि दूसरे प्रदेशों की गायें आपके यहां आने में उन प्रदेशों के गो-वध-बंदी कानून बेकार साबित हो रहे हैं। आपने इस कार्य में अपनी ओर से सहयोग देना भी कबूल किया था, इसलिये अन्य प्रदेशों की गायें आपके यहां न आये इसके लिये अपने प्रदेश में जो भी योजना या कानून बना सकते हों वनाने का प्रयत्न कीजियेगा ।

आप लोगों ने एक बार नहीं, अनेक बार स्वीकार किया है कि उपयोगी पशुओं की कतल कतई रोक देंगे। आपने यह भी दलील दी है कि सुप्रीम कोर्ट का यह कहना ठीक नहीं है कि कुल गायों की कतल बंद किये बिना उपयोगी गायों की कतल रुक नहीं

सकती । सुप्रीम कोर्ट का निर्णय १९५८ का है । २० वर्षों में शासन-व्यवस्था इतनी सक्षम हो गई है कि अनुपयोगी गायों की कतल रोके बिना भी उपयोगी गायों की कतल आप रोक सकते हैं । कृपया इस चेलेंज की ओर ध्यान दीजिये और उपयोगी गोधन की कतल रोककर दिखाइयेगा ।

आपने यह दलील दी है कि गोहत्या बंद करनें पर १४ लाख गायों का भार केरल को उठाना पडेगा, जिसका खर्चा सालाना ५० करोड रु. से अधिक होगा । आपकी यह दलील कितनी खोखली और भुलावा देनेवाली है, आप सहज समझ सकते हैं । अन्य प्रदेशों की गायों का आना बंद होता है और उपयोगी गायों की कतल आप बंद कर देते हैं, ये दो बातें हो जाने के बाद कतल लायक गायें आपके पास ५ प्रतिशत से अधिक नहीं रहेंगी ।

(९) विनोबाजी का कर्तव्य

विनोबाजी को आपने धार्मिक कटघरे से बाहर आने की जो सलाह दी गई है उस बारे में श्री एस० जगन्नाथन् ने आपको अेक पत्र दिया ही है । उसमें स्पष्ट किया है कि भूदान-ग्रामदान के आंदोलन के जरिये भूमि की मालकियत मिटाने का तथा गरीब से गरीब तक पहुंचने का प्रयत्न किस प्रकार विनोबाजी ने किया था । अब तो राजनीतिज्ञों की बारी है कि वे अपने छोटे से घोंसले के बाहर आकर विचार करें । (जगन्नाथन्जी का पत्र अलग से दिया है)

आशा है, आप खुले दिल से हमारी बात समझने की कोशिश करेंगे, इस आशा से हमने भी खुले दिल से सारा लिख दिया है । इन सारे विषयों पर साथ बैठकर चर्चा करनी हो तो हमारी तैयारी है । कष्ट के लिये क्षमा कीजियेगा ।

अ. भा. कृषि गोसेवा-संघ
गोपुरी, वर्धा

आपका,
राधाकृष्ण बजाज
महामंत्री

१०८६

गोसेवा के विविध विधायक पहलू

प्रविणा : भाविनी

बहुत खुशी की बात है कि पू० बाबा की उपस्थिति में हम सब पुनः आज इकट्ठा हो रहे हैं। अवतारी पुरुषों के जन्म-मरण का और कोई गणित नहीं हो सकता, सिवाय इसके कि जो कार्य करने के लिये वे आये हैं वे कार्य संपूर्ण संपन्न हों। पू० बाबा ने इस युग के लिये तीन बहुत मौलीक विचार दिये हैं। (१) विश्व शांति सेना (२) धार्मिक भेदाभेद के ऊपर मानव धर्म की मूल्य प्रतिष्ठा और (३) अत्यंत हिंसा का मुकाबला अत्यंत अहिंसा के विज्ञान से साफल्यपूर्वक कर दिखाना। हम आशा कर सकते हैं कि पू० बाबा इन तीनों महान विचारों को वास्तविक स्वरूप देंगे और कई वर्षों तक हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

मैं आज केरल के अनुभव में से गाय के बारे में जो मन्थन और उसमें से निकले हुए कुछ हल यहां पेश करूंगी। जहां-जहां हम गये अनेक वास्तविकताएं हमारे सामने आती गई। जिन्होंने समस्याओं के प्रति हमारा ध्यान आकृष्ट किया उन्होंने ही अनेक बार हल भी सुझाये। ऐसे जितने सूचन सामने आये, सबकी सेवा में रख रही हूं।

१) गोसदन औद्योगिक कॉम्प्लेक्स : सबसे बडा एक विचार जो काम करते-करते सामने आया वह गोसदन इंडस्ट्रीअल कॉम्प्लेक्स का है। विज्ञान और तकनिकी आज इतनी विकसित हुई है कि अगर गाय की मदद में वह आये तो कोई गाय अनार्थिक नहीं रह सकती। पांजरापोल, गोसदन आदि का जो पुराना नमुना है वह अनार्थिक गायों का बोझ किस प्रकार वहन करें उसी दृष्टि से सोचता है। लेकिन गोरक्षा के हमारे काम में यह बिलकुल साफ है कि कटने वाली गायों में से केवल दस प्रतिशत या उससे भी कम अनुपयोगी प्राणी हैं। और आज तो उनको भी आर्थिक बनाया जा सकता है। पुराने ढंग के पांजरापोल बिलकुल बुढी गायों को ही रखते हैं। भटकती गायें दान की प्रक्रिया से वहां आती हैं। और दान स ही उनको निभाने का सोचा जाता है। आदि से अंत तक ये गायें पांजरापोल पर एक आर्थिक बोझ बनती है, क्योंकि उनके पालन के साथ गोबर का पूर्ण उपयोग करने की कोई स्कीम नहीं जुडी

होती । अलावा इसके, गाय मरने पर भी वैष्णव या जैन परिवार के गोसदन यह नहीं चाहते कि गाय को चिरा जाय और उसकी चर्बी, हड्डी आदि का उपयोग हो । चमार, हरिजन इत्यादि का प्रवेश भी पांजरापोल में मान्य नहीं । अैसी हालत में गाय मरने पर मजदूर लगवाकर १०-१५ रुपये खर्च करके गड्ढा बनाकर उसे दफनाया जाता है । आज अगर जिंदा गाय को बचाना हो तो ऐसी पद्धति बदलनी पडेगी । गोसदन की यह कल्पना ही छोडनी पडेगी । हमारा सुझाव रहा कि जहां-जहां गायों के समुहों को रखना है वहां वहां उनके इर्दगिर्द पांच छोटेमोटे उद्योग अवश्य खडे किये जावें । इन उद्योगों के स्वतंत्र युनिट्स गोसदन के साथ जुडे हुए हों । वे सब पब्लिक या प्रायव्हेट लि० कंपनी या को-ओपरेटिव्ह सोसायटीज हों, जो अपने शेअर होल्डरों को हर साल बाकायदा डिव्हिडंड दे सकें । ये उद्योग निम्न प्रकार के रहेंगे ।

अ) गोबर गैस प्लैन्ट

ब) गैस निकल जाने के बाद जो स्लर या कूडा रहता है, उसमें गोवर के पूरे नायट्रेट्स कायम रहते हैं तो उनको योग्य मात्रा के डब्बों या बाक्सों में भर कर के उसका खेती में उपयोग कराने वाला फर्टीलायझर प्लान्ट

क) गोबर एवं गोमूत्र की मदद से दवाएं तैयार करनेवाली फार्मास्यूटिकल्स कंपनी

ड) स्वाभाविकत: मरनेवाले प्राणी के चर्बी इत्यादी के उपयोग से बननेवाली साबून की फैक्टरी

इ) स्वाभाविकत: मरनेवाले प्राणी के चमडे की व्यवस्था करनेवाली लेदर इंडस्ट्रीज

यह प्रयोग एक-दो जगह करके देखेंगे तो हिंदुस्तान के कुशल और गोप्रेमी व्यापारी वर्ग को इसे उठा लेने में देरी नहीं लगेगी ।

प्रोजेक्ट कमेटी बनाकर के सौ गायों के एक युनिट के लिये ऐसा इंडस्ट्रियल कॉम्प्लेक्स खडा करने में कितनी जमीन, कितने पैसे, कितनी एम्प्लायमेंट इत्यादि लगेंगे उसका अध्ययन करके देश के नामी गोप्रेमी व्यापारियों को हम विचारार्थ भेज सकते हैं ।

२) पालनार्थ खरीदनेवाली संस्था :— इस चीज की आज देश में जो कमी है वह अत्यंत दु:खद है । हर सप्ताह हजारों किसान अपने-अपने पशुओं

को बेचना चाहते हैं। लेकिन सुनियोजित पशु बाजारों में खरीदनेवाले लोग सबके सब निषेधात्मक ग्रुप के प्रतिनिधि हैं। या तो एक्सपोर्ट के, व्यापारियों के, नहीं तो कसाईखानों के दलाल ही गायों को बडे-बडे जत्थों में खरीद लेते हैं। जिन किसानों को दूध छूटने पर गाय महंगी पडती है। या खेती की सिझन जाने पर बैल पुसाता नहीं वे बेच तो देते हैं। लेकिन उनको कुछ महीनों के बाद फिरसे ये पशु चाहिये। अगर मार्केट में पशुओं को खरीद करनेवाली कोई ऐसी मध्यंतरीन एजंसीज् खडी हो सके कि जो इन पशुओं को जत्थों में खरीद ले कुछ महीने पाले, छोटे बेछडों को वडा करें और सिझन बंदलते ही खरीद की कीमत से थोडी ज्यादा कीमत में फिर से किसानों को बेच सकें तो देश का पशु-समुदाय कटने से वचेगा। आज के जैसे पशु-वाजार बेचनेवाली गायों के अखाडे वन गये हैं वैसे अगर उपयोगी गायों को कहां से खरीदना यह लोग जानने लगेंगे तो पूरा समाज उसका लाभ उठायेगा। आज के पांजरापोल या गोसदनों के पास यह प्रतिष्ठा नहीं है। ये जो स्थान वनेंगे वे केवल पशु के खरीद-बिक्री के माध्यम वनेंगे। और उनको इस धंधे में हानि आने की संभावना नहीं।

३) केटल क्रेशि : एक सुझाव ऐसा भी है कि खरीद-बिक्री के अलावा किसान के उपयोगी पशुओं के लिये अल्पकालीन पालन व्यवस्था रखी जाय। आजकल बडे शहरो में जहां पती-पत्नी दोनों काम पर जाते हैं उनके बच्चों को दिनभर भाडे से संभाला जाता है। उसी प्रकार किसानों से पशु पालन का एक-तिहाई जितना खर्च भाडे से लेकर उनके पशुओं को सुखे सीझन में हम रख सकते हैं। और तीन-चार महीनों के बाद अपने-अपने पशु वे वापिस ले जा सकते हैं। ऐसे पशुओं के लिये चारेपानी के व्यवस्था में सामुदायिक आयोजन के कारण हमें कुछ लाभ मिल सकता है।

४) विजिलन्स कमेटी : जो गाय आज कत्ल के लिये जाती है वह सैकडों मील चलती है, वीच में चारेपानी की व्यवस्था नहीं। साफ है कि ये सारी जवान गाये हैं। लेकिन सरकार की तरफ से हमेशा यही पूछा जाता है कि उपयोगी पशुओं को कौन बेचेगा ? तो हमारा सुझाव है कि कैसी गाय कत्ल के लिये जाती है उसका अंदाज और चर्चा करने की अपेक्षा एक तटस्थ विजिलन्स कमेटी मुकर्रर की जाय जो सरकार को सच्चे आँकडें दे सकती है और जगह-जगह जहां अभद्र हत्या होती है उसकी जानकारी भी पहुंचा सकती है।

५) सोसायटी फार प्रिवेंशन आफ क्रुएल्टी टू अॅनीमल्स SPCA नाम की संस्था आजकल अनेक प्रदेशों में बनी है। लेकिन जैसे नशाबंदी के बारे में वेतन पानेवाले पुलिस गलत तरीकों के हथियार बनते हैं वैसे ही ऐसी संस्थाओं पर भी वेतनधारी लोग नहीं रहने चाहिये। नहीं तो किसानों को छोठी बातों में परेशान होना पडता है। और वे पशु बेंच देना पसंद करते हैं।

६) किसानों के बीच हम गये। हमने देखा कि इच्छा न होने पर भी वे अपने प्यारे पशु को बेचते हैं। यह विवशता अधिकतर पुरानी, सामाजिक कुरीति के कारण है। गरीब, बिमार बच्चों को इलाज के लिये कोई उधार पैसा नहीं देगा। लेकिन वहीं बच्चा मर जाने पर सहभोज के लिये सारी जमात उसको उधार पैसे देती है। अनेक संस्कारों के लिए जबरदस्ती खर्च करना पडता है। इसलिये यह विवशता हम दूर करें।

७) गायों की दलाली करनेवालों से हम मिले। उन्होंने कहा, हमें भूदान कि जमीन दिलवाइए या दूसरा पेशा दीजिए तो हम यह धंधा छोड सकते हैं। हमें यह काम पसंद नहीं।

८) कई प्रदेशों में पशु के खाद्य महंगे होने से भी सीझन के बाद किसान को पशु बेचने की नौबत आती है। पशुखाद्य का निर्यात बढ रहा है। यह बंद होना चाहिए। और जिन प्रदेशों में घास या खली ज्यादा है वहां से सूखे प्रदेशों तक पशुखाद्य आसानी से जा सके ऐसी कोई व्यवस्था होनी चाहिए।

९) छोटे किसानों ने हमें कहा कि "हमारे पास दो-तीन एकड जमीन है उसकी कीमत की अपेक्षा एक जोडी बैल की कीमत अब बढ गयी है तो हम इतना पैसा कहां से लायें? हम जमीन बेचकर दूसरे कामों में चले जायें।" इसका मतलब, बढती हुई गोहत्या छोटे किसानों को जमीन से उखाड कर फेंक देगी। इन छोटे खेतों पर जिन गरीब मजदूरों को रोजगारी मिलती है वे भी खेती से बाहर फेक दिये जावेंगे। जिस जमीनदारी पद्धती को निकालने के लिए देश में पिछले तीस सालों में इतना प्रयत्न किया है वहीं जमीनदारी गोहत्या के मार्ग से, पिछले 'दरवाजे' से वापिस आ रही है।

१०) मध्यम कक्षा के दो-तीन किसानों ने चौकन्ना कर देनेवाली यह बात भी कही कि "खेती में इतनी मेहनत करके थोडा कमाना, इसकी अपेक्षा अगर पशु के भाव दिन-ब-दिन इतने बढते हैं तो पशुपालन करके मांस के

लिए पशु बेचना अधिक अच्छा दिखता है। हमारी जमीन का हम वैसा उपयोग करेंगे।" यह खतरनाक लगा। धान्य आदि उपजाने वाली जमीन बडे ग्रामीणों के हाथ में 'गोमांसपशु' उपजानेवाली जमीन बन जायेगी तो क्या होगा ?

११) एक बहुत भयंकर बात सुनी, वह यह कि गुरूवायूर, पलनी इत्यादि बडे-बडे धर्ममंदिरों में जो गायें जाती हैं वे दूसरे दिन सीधी कसाईखाने भेज दी जाती हैं। ये गायें मंदिरों को दान में मिलती हैं। उन पर उनका कोई खर्च नहीं। फिर भी आजकल मंदिर के जो सरकारी ट्रस्ट बन गये हैं उनके आडिटरों का आग्रह रहता है कि ज्यादा-से-ज्यादा कीमत से उनको बेचना चाहिए। ऑक्शन, नीलाम होता है। कसाई से अधिक कीमत कौन दे सकता है ?

हमारा सुझाव है कि देश भर के बडे मंदिरों के बारे में हमें कुछ करना चाहिए। आस्ट्रेलिया जैसे देश में सरकार ने एक परिवार एक गाय यह नीति अपनायी है और जो ग्रामीण लोग पशु पालना चाहते हैं उनको मुफ्त में पशु दिये जाते हैं। मंदिर में भेट में आयी हुई गायों का यही निकाल होना चाहिए। सोशल वेल्फेअर बोर्ड की तरफ से गायों को बाँटने का कार्यक्रम उठाया जा रहा है। मंदिर की गायों को इस स्कीम के साथ जोड दिया जाय।

एक सुझाव यह भी रहा कि मंदिर के ट्रस्ट को इसकी अनैतिकता बतायी जाय। हमें सुझाया गया कि रिलिजीयस एन्डोमेंट बोर्ड में अलग-अलग धर्म के प्रतिनिधि रहते हैं और वे अपने-अपने धर्म की पवित्रता की रक्षा के लिये प्रयत्न करते हैं। ख्रिस्ती या मुसलमान में फादर और मौलवी रहते हैं। लेकिन इस बोर्ड के सनातन धर्म के सदस्य चुने हुए सदस्य रहते हैं। उनके चुनाव के लिए पैसे इकट्ठे करने पडते हैं। इसलिये धर्म की अपेक्षा पैसे के प्रति देखने वाली उनकी दृष्टि रहती है। धर्म-गुरु धर्म को जिस प्रकार समझते हैं उस प्रकार इन इलेक्टेड मंत्रियों को नहीं समझती, इसलिये हमारा आग्रह रहना चाहियें कि इस बोर्ड में ऐसे लोग रहें जिनको सच्ची, धार्मिक सूझ-समझ हों और जो सच्चे अपिरग्रही, संन्यासी या समाजसेवक हों।

१२) पूरे देशभर में अगर गायों की रक्षा करनी है, यह सिद्धांत स्वीकार हो जाये तो बुढे पशुओं के पालन के बारें में उसी ढंग से सोचा जा सकता है, जैसे हम बूढे मनुष्यों के बारे में सोचते हैं। जैसे कि जो पशु पंद्रह साल

सेवा करके देश की नेशनल इनकम बढाता है उसको उसकी कमाई के दिनों में कंपलसरी इन्सुरन्स स्कीम के द्वारा बुढापें में अच्छी तरह से रखने का आयोजन हो सकता है। उसी प्रकार ओल्ड अेज डिपाजिट स्किम भी हो सकती है।

१३) देश के अनेक औद्योगिक यूनिट जब घाटे में चलते हैं तब सरकार उन युनिटों को खुद ले लेती है और चलाती है। देश का जो पैसा इन फेक्टरियों में रोका गया है, वह नष्ट न हो और रोजगारी की सुविधा बनी रहे, इसलिये नुकसान सहन करके भी इनको संभालना देश ने अपना कर्तव्य माना है, उसी तरह का गाय-बैल इस देश का धन है और रोजगारी का बहुत बड़ा साधन है। २२ करोड ७० लाख पशु आज अलग अलग उद्योगों में १२ करोड ६० लाख लोगों को रोजगार दे रहे हैं। इस दृष्टि से भी गोरक्षा का आयोजन होना चाहिये।

१४) माडर्न स्लाटरहाऊस: सुना है कि वर्ल्ड कोन्सील आफ मीट प्रोड्यूसर इस देश में अगले दो-चार सालों में दो प्रचंड कत्लखाने खडे करने वाले हैं – १) हैद्राबाद और २) कोचीन में। इन कत्लखानों में प्रतिदिन तीन सौ बडे पशु और पचास हजार छोटे पशु कत्ल हो सकेंगे। एक बार अगर ये बन गये और इतने बडे पैमाने पर पशुमांस का व्यापार खुल गया तो फिर देश की कृषि को कोई बचा नहीं सकेगा। इसलिये हमारे सत्याग्रह से ये स्लाटर हाऊस खडे न हो पायें इसका प्रयत्न करना चाहिये।

१५) हम जो है कि अपने पशु कत्ल करके अमरीका, रूस तथा अरब देशों को मांस भेज रहे हैं, जब कि ये पशु हमको अनेक वर्षों तक उत्तम खाद दे सकते हैं। दूसरी ओर अरब देशों को अच्छा खाद भी चाहिये और अमरीका ने यह अक्ल रखी है कि अपने पशुधन को बचायें और वे प्रतिवर्ष अरब देशों को आठ हजार टन गोबर का खाद भेज रहे है।

१६) विदेशों से आनेवाला दूध का पावडर मुफ्त में देश के गरीब बच्चों को खिलाने के लिये भेजा जाता है। लेकिन इस देश में आने के बाद सरकारी डेरियों द्वारा उसका गलत उपयोग होता है। असल में गरीब आदिवासी ग्रामीण जनता में वह पहुंचाना चाहिये। लेकिन वास्तव में देश के चार सबसे बडे शहरों में वह पहुंचता है। वहां टोन मिल्क के नाम से सस्ते दाम से बेचा जाता है। शहर के धनी से धनी लोग इस दूध की किमत से

सच्चे दूध की तुलना करते है। टोन मिल्क का उपयोग होता है और सच्चे दूध की सही कीमत ग्रामीण गोपालकों को मिलती नहीं। हमें चाहिये कि विदेश के दूध की मदद का सारा कोटा गांवों में ही जाना चाहिये।

१७) सुना है कि विदेशों में, जहां बीफ अॅनिमल तैयार किये जाते हैं उनका मांस बढे उस दृष्टि से उनको कुछ हारमोन्स के इंजेक्शन दिये जाते हैं। जब यह हारमोन बीफ बाजार में जाते हैं तो उनके खानेवाले के मांस की पेशियां भी उन दवाइयों के कारण अप्रमाण बढने लगती हैं। आठ साल की लडकी अठारह साल की दिखने लगती है। इसलिये कुछ सामाजिक समस्याएं वहां खडी होने लगी हैं। बडे-बडे शहरों में मांस की दो प्रकार की दुकाने रहती हैं। हार्मोन बीफ और नॉनहारमोन बीफ विश्व के बाजारों में हिंदुस्तान के बीफ की मांग तेजी से बढ रही है। क्योंकि हिंदुस्तान के पशुओं को अबतक हारमोन के इंजेक्शन नहीं दे रहे हैं और इसलिए यहां का बीफ खाना सुरक्षित माना जाता है।

१८) जिन प्रदेशों में गोहत्याबंदी है वहां से भी मांस दूसरे प्रदेशों में चोरी से जाता है। अगर पशुओं को प्रदेश से बाहर जाने से रोका जायेगा तो केरल वाले कहते हैं कि हम वहीं पशु काटकर हमारे प्रदेश में मांस ले आयेंगे। हमें कोई डर नहीं, अगर तमिलनाड या कर्नाटक की सरकारें हमारे यहां पशु नहीं भेजें तो भी।

१९) हैद्राबाद जैसे शहरों से विमान भर-भरके जिन्दा पशु भी अरब देशों में जा रहे हैं। इसलिये सरकार यदि बीफ एक्सपोर्ट बंद करती है तो अनेक गलत तरीकों के व्यापार से हम बचेंगे। हमें विशेष विनंती करनी चाहिये कि गोवंश की निकासी नहीं होनी चाहिये। जिन्दा पशु की निकासी नहीं होनी चाहिये। पशु के खाद्य की निकसी नहीं होनी चाहिये। और पशु-शिशु और बछडों के चमडे की निकासी भी संपूर्णतया बंद होनी चाहिये।

२०) कोईमतूर की मीलवालों ने हमको कहा कि हर मिल या फेक्टरी के पास बडी जमीन, धन की व्यवस्था तथा गाय के प्रति प्रेम भी रहता है इसलिये हर उद्योग के साथ कुछ पशु-पालन हम आसानी से कर सकते हैं। इसमें अगर आप प्रेरणा देगें तो तुरत अनेक गोसदन कैसे खडे करें और उनको

कौन संभाले यह चिंता कम हो सकती है। हमारे पूरे ग्रामीण आयोजन के साथ यह चीज कितनी सुसंगत है यह सोचना पडेगा। लेकिन एक उपाय यह सुझाया गया।

२१) अगर हम आल इंडिया व्यापारी कान्फरन्स बुला सकेंगे तो उसका लाभ होगा।

२३) गाय के बारे में यह और दूसरी जो जानकारी या सुझाव हमारे काम के दौरान आते रहेंगे उनका अध्ययन उपयोगी होगा। और आगे का आयोजन एवं आर्थिक व्यवस्था आदि करने के लिये देशभर में एक नानआफीसियल (बिनसरकारी) गोकमिशन बनाया जाय तो संशोधन में सुविधा होगी।

२३) शहरवालों को डर है कि गोबर गैस प्लान्ट घर में रखने से दुर्गन्ध फैलेगी। यह लोकशिक्षण का सवाल है। खादी कमिशन का कहना है कि कम-से-कम पैसोंसे छोटे-से-छोटा युनिट खडा किया जा सकता है। उसके लिये बैंक से लोन भी मिल सकता है। रिपेअरी इत्यादि सर्व्हिसिंग खादी कमिशन मुफ्त में कर देता है। और बहुत सस्ते में गैस तैयार हो सकता है, इसकी जानकारी फैलायी जाय।

२४) केरल की आज जो दशा है उसमें अरब देशों के प्रवासी स्मगल्ड चीजें तथा वस्तुओं से लेकर लडकियों तक का व्यापार बढ रहा है। ये सब तरफ से खतरनाक है। हम संस्कृति के संरक्षक बनें और सांप्रदायिक प्रचार और साम्यवादी प्रचार के सामने गांधी-विचार को खडा करें। इसीमें पवित्रता और शुभ भविष्य है। (कार्यकर्ता संमेलन भाषण से, २-५-७९)

मुगलसराय में पुनः गायें रोकना प्रारंभ

बंगाल की ओर कटने के लिए जानेवाली गायों को सफलतापूर्वक अप्रैल माह में मुगलसराय स्टेशन के अहाते में रोका गया था। ट्रेन से बडी मात्रा में इस स्टेशन से गायें जाती हैं। बनारस के गोप्रेमी मित्रों ने ता. १०-६-७९ से मुगलसराय में पुनः गायों को रोकने का सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया है।

— संपादक

Assistance for Implementing Present legislation in Bengal

To,
Shri Jyoti Basu,
Chief Minister, Government of West Bengal,
Calcutta

Dear Friend,

Shri R. K. Patil, Vice President, Central Goraksha Abhiyan Samiti, had sent a telegram to you followed by a letter requesting time to seek your interview between 18th & 21st May. Both of us had been to Calcutta but there was no response from your side. So this letter.

You are aware of our demand for legislation for cow protection within the limits of the Supreme Court, mean while we have decided that the Akhil Bharat Krishi Go-sewa Sangh should assist the Government of West Bengal in the strict implementation of the existing legislation. Since 1976 the Govt. is declaring again and again but practically no progress has been made about this. To quote, on 3.9.1976 Shri Om Mehata, the then State Home Minister of Government of India informed in the Rajya Sabha, "Information has also been received from West Bengal where there is already a partial ban on the slaughter of animals that they would be taking adequate steps to enforce the existing legislation strictly."

Summarising the discussions between Akhil Bharat Krishi Gosewa Sangh and the Government of West Bengal, Shri M. Bhattacharya, Secretary to Govt. of West Bengal, writes in his letter on 30.8.1978—

"In regard to import of cattle from outside by private traders, the Sangh was of the view that department of Animal Husbandry & Veterinary Services should set up a suitable machinery for ensuring that milch animals are not booked by the Railways and import should be allowed against permits

only. It was agreed that while this would be desirable, from the administrative point of view it would be only possible for the department to set up suitable arrangements at Howrah and Sealdah Railway Station to ensure that no animals on which there is a restriction of slaughter under the Animal Slaughter Control Act are allowed to go into Calcutta City. If milch animals are found to have been imported, such animals will be impounded under the existing rules and regulations and sent to sites which are now under preparation for removal of city kept cattle. In this context, it was also the consensus that the project for removal of city kept cattle should be pursued."

As a first step in this direction, we shall assist the Government by setting up observer teams. These teams would go to the railway station and bus stands from where cattle are imported. Shri Charuchandra Bhandari, our Chairman of West Bengal branch, would inform the Government of details about the leader of the team, date from which this will commence and places where the teams would go. These teams would only observe would neither obstruct cattle nor violate any law. They would see whether the cow keepers importing cattle from outside are in possession of proper permits according to the licensing Act and Animal Slaughter Control Act on not.

We trust that in this task the State Govt. would render our teams full cooperation. Your officers should be present at the places where our observstion teams go. The e offiicers should inspect permits. Due legal proceediug should start against those who do not hold proper permits.

We trust that you will appreciate our proposals to assist the Government and issue instructions accordingly to all concerned. Daily observation report and suggestions of our teams will be sent to you.

Yours sincerely
Radhakrishna Bajaj
General Secretary
A. B. Krishi Goseva Sangh

Gopuri, Wardha
Date : 26-5-1979

Politicians should comeout of their narrow shades

LETTER TO CHIEF MINISTER OF KERALA

Dear Shri Vasudevan Nair,

You have appealed to Vinobaji in your open letter to him that he should come out of his religicus shell and work for the reawakening of the Indian people. When Vinobaji launched the unique movement for the soloution of the land problem through Bhoodan and Gramdhan, he was rediculed and condemned by you and your party as anti revolutionary. All the political parties though they welcomed his movement and offered support during the Yelwal conference in 1957 in the presence of Nehruji they never raised their fingures in support of the movement.

Vinobaji furrowed his lonely path and received as voluntory gift of 4.3 Million acres, much more then what all the State Governments acquired through the land ceiling acts. Vinobaji reached the climax of the movement wheu the pepole offered to surrender their private ownership in favour of Gramsabha ownership in the name of Gramdhan. Thousands of villages all over the country opted for Gramdhan. If only the state and the Central Governments had come forward to help the Gramdhan people with adequate financial help the movement would have swept the country. The money lenders and the banks refused to give loan to the Gradahan people for the reason that they have surrendered their ownership to the Gramasabha and lost their credit worthiness. Inspite of these throttling handicaps, there are still hundreds ef Gramdhan villages struggling to assert and exist according to the Gramdhan principles.

Vinobaji has demonstrated to you and the countrymen the democatic way for a silent revolution in this country and that the Indian peasantry is quite prepared for voluntarily transfering their private ownership to village community ownership with the ultimate goal of power to the people through Grams

Swaraj, it is clear vindication of India's culture and tradition that there is no need for a violent revolution similar to that of Russia or China. Vinobaji has prepared the country for the silent and peaceful agrorian revolution. What more do you expect from him ?

Vinobaji has pronounced to the world that the days of politics and religion have gone and the future is of science and spirituality which was acclaimed by Nehruji, Nixon and other statesmen of the world. Vinobaji has not any religious shell to give up. To dub him as a religious man In the narrow sense is twisting and misrepresenting Vinobaji's humanitarian high ideals. The agricultural enconomics of cow protection is given a religious colour by politicians and vested interests. The cow protection, as laid down in the constitution by the founding fathers, has no religious background at all. It is pure and simple agricultural economics.

You have lamented in your letter that the prices of buffaloes have shot up and prices of all kinds of meat have gone up as a consequence of Vinobaji's fast and the peoples movement for the prohibition of cattle transport from Tamil Nadu. The Tamil Nadu Kisans are sore at heart that they are unable to purchase a cow or a pair of bulls in the market as the Kerala traders flood the cattle market offering high prices. A pair of work bull sold at Rs. 500/- four or five years ago has now soared so high as Rs. 2,000/- and Rs. 2,500/- and similarly the cow. The State Government which has taken up the prcgrame of helping tho weaker section of landless and the small Kisans by providing milch cows or pair of work bulls through the Nationalised Banks find it beyond the means of a poor Kisan to repay the amount as the prices have risen up abnormally high. Are we to feed the slaughter houses of Kerala at the loss of agriculture and suffering of the Tamil Nadu Kisans ?

The Supreme Court Judgement had to recommed for total ban on cow slaughter after the practical experience that the loopholes provided in the Acts regarding age and deformity

has lead to the indiscreminate killing of cattle to the detriment of our agricultural economy.

It is the politicians who should come out of their narrow shall of politics of power. Money, Caste, hooliganism of booth capture have debased our democracy. Let not the cow protection a humanitarian and economic issue be smeared with religious or communal colour for political exploitation with the eye on votes.

Tamilnadu Sarvodaya Mandal
9 Power House Roob Madurai

S. Jagannathan
Ghairman

THE CONSTITUTION (FIFTIETH AMENDMENT) BILL, 1979

A BILL

further to amend the Constitution of India.

Be it enacted by Parliament in the Thirtieth Year of the Republic of India as follows :–

1. This Act may be called the Constitution (Fiftieth Amendment) Act, 1979.

Short title.

2. In the Seventh Schedule to the constitution,–

Amendment of Seventh Schedule.

(a) in List II—State List, in entry 15, after the words "prevention of animal diseases", the words, figures and letter "subject to the provisions of entry 17C of List III" shall be inserted ;

(b) in List III—Concurrent List, after entry 17B, the following entry shall be inserted, namely :—

"17C. Prohibiting the slaughter of cows and calves and other milch and draught cattle."

STATEMENT OF OF OBJECT AND REASONS

The Directive Principle of State Policy contained in article 48 of the constitution enjoins that "the State shall endeavour to organise agriculture and animal husbandry on modern and scientific lines and shall, in particular, take steps for preserving and improving the breeds, and prohibiting the slaughter, of cows and calves and other milch and draught cattle." In order to give effect to this directive principle, several States have enacted legislation restricting slaughter of cows and their progeny and other milch and draught cattle.

2. Legislation in this matter is relatable to entry 15 of the State List and consequently there is no uniformity in the legislation enacted to give effect to this directive principle. There is a strong public opinion in favour of a uniform legislation relating to prevention of slaughter of cows and calves and other milch and draught cattle. The Lok Sabha also passed a resolution on the 12th April, 1979, urging the Government of India to ensure that ban on the slaughter of cows and calves should be effected in accordnnce with the constitutional provision.

3. It is therefore proposed to amend the constitution with the limited objective of securing legislative competence for Parliament to legislate on the subject of prohibition of slaughter of cows and calves and other milch and draught cattle. To achieve this objective, it is proposed to insert a new entry in the concurrent list on this subject and to make the existing 15 in the State List subject to the proposed new entry in the concurrent list.

4. The Bill seeks to achieve the above object.

New Delhi;
The 10th May, 1979.

SURJIT SINGH BARNALA

उत्तराधिकारी तैयार करिये

विनोबा

श्री. पाटीलसाहबने स्मरणिका दी है। उसमें मुख्य समस्या है— नयी पीढीको गोरक्षाके विषयमें रस नहीं है, क्या किया जाय? इसका उपाय गांधीजीने किया था। गांधीजीका एक शिष्य था महामूर्ख। उसको उन्होंने आध्यात्मिक उत्तराधिकारी किया और दूसरा महाचतुर था, उसे जाहिर कर दिया, व्यावहारिक उत्तराधिकारी। जैसे गांधीजीने अपने उत्तराधिकारी जाहिर कर दिये वैसे आप गोसवकोंके उत्तराधिकारी कौन? नयी पीढीको रस नहीं है तो कैसे रस पिलायें? इसलिये आपका उत्तराधिकारी चाहिये। लडका हो या शिष्य, उसे समझा दीजिये। आपको दुनियाका अनुभव है, वह उसके सामने रखिये।

बंगसाहबका कहना है कि केवल गोरक्षा यह अलग चीज न रखकर पूरे ग्रामस्वराज्यके कार्यक्रम के साथ उसे जोडा जाय तो रस आ सकता है। यह ठीक है। गोरक्षाको ग्रामस्वराज्यके साथ जोड देना चाहिये। गांव-गांव जाकर परिवार-भावना निर्माण करनी चाहिये। धीरेन्‌भाईने इसको 'मार्ग-खोजन' का नाम दिया है। उन्होंने कहा था, गांवोंकी समस्या हल करनेमें हमारी अपनी बुद्धिका विकास होगा। अब उनके वारिस कौन होंगे? ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर, व्रतधारी ऐसे उनके वारिस होंगे।

गाय किसी पक्षको नहीं जानती। जो उसकी सेवा करेगा वह उसकी रक्षा करें। इतना ही नहीं, हिंदु, मुसलमान, ख्रिश्चन, ऐसा

धर्मभेद भी गाय नहीं जानती । वह सबको दूध देगी । गांवके सब लोग मिलकर गोपालन की योजना करें। इस काममें पैसे की जरूरत रहती है। पैसा न मिलता हो तो अनाज इकट्ठा करो। कलकत्तामें अनेक व्यापारी हैं । उनका संघ बनना चाहिये, जिसको गोपालनकी समस्या हल कर देनी चाहिये ।

एक प्रान्तकी गायें दूसरे प्रान्तोंमें कटने के लिये जानेसे रोकना चाहिये। कहते हैं, पहले ट्रेनसे जाती थीं अब ट्रकोंपर जाती हैं। विज्ञान के जमानेमें इधरसे उधर गायें ले जानेके लिये अनेक साधन हो सकते हैं। उनको भी रोकना चाहिये ।

मार्गदर्शनके तौरपर मैंने कहा है कि प्रान्तमें एक-एक जिला चुनो, जैसे बिहारमें पूर्णिया, उत्तर प्रदेशमें बलिया, पंजाबमें होशियारपुर, महाराष्ट्रमें वर्धा, थाना इ. जिलोंमें पूरी ताकत लगाइये। इसका परिणाम आसपासके क्षेत्रमें भी होगा। जो जहां काम करते होंगे हर माह एक चिट्ठी बाबाको भी लिखें। क्या काम हुआ, क्या दिक्कतें आयी? बाबाके सेक्रेटरी की तरफसे उन पत्रोंकी पहुंच दी जायेगी। बाबा उन पत्रोंपर अभिध्यान करेगा।

बाबा ब्रह्मचारी है। उसके अनेक लडके-लडकियाँ भारत भरमें हैं। उस-उस स्थानसे उनको काममें ले जाओ।

(ब्रह्मविद्या-मंदिर, पवनारके प्रांगणमें ता. १०-६-७९ को गोसेवकोंके, कार्यकर्ताओंके प्रश्नोंके उत्तरमें किये भाषण तथा प्रश्नोत्तरसे)

गोसेवा संघ तथा गोहत्त्या-बंदी समिति सभा वृत्तांत

(ता. ९ तथा १० अप्रैल ७९)

अखिल भारत कृषि-गोसेवा संघ की कार्यवाहक समिति तथा गोहत्त्या-बंदी अभियान समिति की संयुक्त सभा ता. ९ तथा १० जून १९७९ को दत्तपुर (वर्धा) में हुई। इस सभा में भारत के विभिन्न प्रान्तों से गोसेवा के क्षेत्र में काम करनेवाले प्रमुख ४०-५० कार्यकर्ता उपस्थित थे। पू. विनोबाजी का उपवास समाप्त हो जाने पर गोहत्त्या-बंदी के बचे हुए कार्य का लेखाजोखा लेने तथा आगे के कार्यक्रम बनाने का प्रयास इस सभा द्वारा किया गया।

माता जानकीदेवी बजाज स्मृति प्रस्ताव

सभा के प्रारंभ में स्व. माताजी श्रीमती जानकीदेवीजी बजाज की मृत्युपर स्मृति प्रस्ताव किया गया। गोसेवा के कार्य में स्व. माताजी ने जीवन के अंतिम क्षण तक गहरी दिलचस्पी रखी। वे गोसेवा संघ की बरसों तक अध्यक्षा भी थीं। हिंदी साहित्य के विद्वान डॉ. हजारी प्रसादजी द्विवेदी तथा बंगाल के श्रेष्ठ चिंतक श्री. वनफूल की मृत्युपर श्रद्धांजाली अर्पित की गयी।

गोहत्त्या-बंदी के लिये तात्कालिक कार्य

चर्चा का प्रारंभ करते हुए गोहत्त्याबंदी अभियान् समिति के उपाध्यक्ष श्री. रा. कृ. पाटील ने कहा कि हमारे सामने गोहत्त्या-बंदी के लिये तात्कालिक स्वरूप के दो काम हैं :

१) संविधान संशोधन द्वारा गोहत्त्या-बंदी कानून केन्द्र सरकार द्वारा बने और प्रान्तों में लागू हो। २) केन्द्रीय कानून नहीं बनता तब तक बंगाल और केरल में कटने के लिये गायें न जावें। यह कार्य कटने के लिये जानेवाले पशुओं के आवागमन पर प्रान्तों द्वारा प्रतिबंध लगाकर तथा जहाँ जरूरत हो वहाँ सत्याग्रह के मार्ग द्वारा जनसहयोग से पशुओं को रोककर किया जाय। शहरी जनता में गाय के प्रति सांस्कृतिक भावना कम हो रही है। नयी पीढी को इस कार्य के प्रति रुचि नहीं है। अतः व्यापक प्रमाण पर जनजागृति का कार्य हम सभी को संयोजित करना चाहिए।

गोसेवा संघ के कार्याध्यक्ष श्री. तुलसीदासभाई विश्राम ने कहा कि

गोरक्षा के प्रश्न को वैज्ञानिक भाषा में आज की पीढी के सामने रखना चाहिये। विदेशी नस्ल से जो संकर जाति देश में निर्माण हो रही है वह सच में भारतीय किसान को लाभदायक है इसका मूल्यमापन होना चाहिये।

कार्यक्षेत्रों में परिस्थिति

इस चर्चा में कई कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। श्री. राधाकृष्णजी बजाज ने कहा कि जुलाई माह में संविधान संशोधन बिल लोकसभा में आयेगा, उससे पूर्व लोकसभा-राज्यसभा सदस्य तथा राज्य विधायकों को गोहत्त्याबंदी के समर्थन की बात समझाने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए उपयुक्त साहित्य निर्माण किया जाय। जहाँ गोहत्त्याबंदी कानून बने हैं वहाँ की सरकारें बूढी और रक्षणीय गायों के सारसम्हाल के लिए आर्थिक तथा अन्य प्रकार से योजनाएँ बनावें, ऐसा प्रयत्न हो। गाय न कटे इस भावना को गावों में फैलाने की जरूरत है। मथुरा क्षेत्र में यह कार्य सफलतापूर्वक हुआ है। द्वारकादासजी जोशी, मंत्री अभियान समिति हाल ही में ओरिसा, बंगाल, बिहार आदि प्रवास करके आये थे। उन्होंने कहा कि देशभर में गायों को बंगाल जाने से रोकने का जो प्रयत्न हुआ उस कारण कलकत्ता के कसाईखानों में कटे जानवरों की संख्या कुछ कम हुई है। यह भी देखा गया कि एक क्षेत्र में सत्याग्रह होने पर वहाँ का बाजार बंद होता है, पर अन्य क्षेत्रों से गाय-बैल भेजे जाते हैं। अतः पशु न जावें, इस ओर सतत ध्यान देने की जरूरत है।

श्री. गोपीनाथन नायर, मंत्री केरल गोहत्त्या निरोध समिति ने बताया कि केरल की सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक स्थिति गोहत्त्या-बंदी के पक्ष में नहीं है। केन्द्र सरकार द्वारा कान्करंट सूची पर यह विषय लाने की घोषणा के बाद प्रान्तीय विषयों में हस्तक्षेप हो रहा है, यह भूमिका लेकर विरोध बढ रहा है। ईसाई तथा मुस्लिम लोग गोहत्त्या-बंदी की मांग को हिंदू विचार का प्रतीक मानकर विरोध कर रहे हैं। हमारे प्रचार से यह विषय जनता के सामने आया; पर उसका कडा विरोध हो रहा है। केरल में व्यापक प्रचार सक्षम कार्यकर्ताओं द्वारा होना जरूरी है।

श्री. देवेन्द्रभाई ने कहा कि मांस उद्योग का गोहत्त्या में आर्थिक हित है। वे संगठित होकर विरोध करने लगे हैं और सरकारों द्वारा उनसे जो आमदनी होती है उस कारण उन्हें रक्षण मिल रहा है। जनता तक गोरक्षा विषय पहुँचाने के लिए पोस्टर्स, लेख, पुस्तिकाओं का प्रकाशन होना चाहिए।

विभिन्न प्रान्तों के कार्यकर्ताओं ने उनके यहाँ चल रहे प्रयत्नों की जानकारी दी। तामिलनाडु के श्री. वरदन्‌जी ने कहा कि हर जिले में कार्यकर्ताओं के शिविर लेकर कार्यकर्ता संग्रह किया जा रहा है। केरल को गायें जाने से रोकने के सत्याग्रह किये जावेंगे। सरकार द्वारा पशुनिर्यात पर आर्डिनन्स द्वारा प्रतिबंध लगाने का प्रयत्न हो रहा है। श्री. यशपालजी मित्तल नें बतलाया कि पंजाब में ता. १५-६-७९ से पशुनिर्यात रोकने के लिए सत्याग्रह आयोजित किया गया है। श्री. अण्णा जाधव उस कार्य में लगे हैं। बनारस के श्री. श्रीकृष्णजी काबरा ने कहा कि मुगलसराय स्टेशन से तथा वाराणसी के सडक के रास्ते ट्रकों से बडी मात्रा में गायें कलकत्ता जाती हैं। उन्हें रोकने का कार्यक्रम पुनः प्रारंभ हो गया है। दिल्ली में ता. १४-६-७९ को एक समा आयोजित की आयी है, जिसमें संविधान संशोधन को सफल करवाने की दृष्टि से अगले कार्य की रूपरेखा बनेगी।

कार्य संयोजन

भविष्य के कार्य को कार्यान्वित करने के लिए नीचे लिखी समितियां बनायी गयी।

१) दिल्ली में जुलाई माह में आनेवाले संविधान संशोधन को सबका समर्थन मिले इस दृष्टि से सभी आवश्यक कार्य करने हेतु निम्नलिखित व्यक्तियों की समिति गठित की गयी –

श्री. रा. कृ. पाटील (संयोजक), श्री. तुलसीदासभाई विश्राम, श्री. देवेंद्र-भाई, श्री. कृष्णराजजी मेहता, श्री. नलिनभाई मेहता तथा श्री. दशरथभाई ठाकर, श्री. हेमदेवभाई, श्री. राधाकृष्णजी बजाज

२) प्रदेशों में जनजागृति का कार्य करने तथा विभिन्न कार्यों का संगठन करने के लिए नीचे लिखे व्यक्तियों को नियुक्त किया गया।

उत्कल – श्रीमती रमादेवी चौधरी

बिहार – श्री. नरसिंह बाबू

उत्तर प्रदेश –

मुगलसराय कार्य – श्री. श्रीकृष्णजी काबरा तथा
श्री. अण्णा जाधव

मथुरा क्षेत्र – श्री. जयतिलालजी तथा
श्री. बाबूलालजी मित्तल

पूरा उत्तर प्रदेश – श्री. मेवालालजी गोस्वामी
हरियाणा – श्रीमती निर्मल आनंद तथा
श्री. निरंजनसिंह
पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर – श्री. यशपालजी मित्तल,
श्री. उजागरसिंह बिलगाजी
राजस्थान – श्री. सोहनलालजी मोदी तथा श्री. गोकुलभाई
महाराष्ट्र – श्री. रामकृष्ण आढे तथा श्री. ठाकुरदासजी बंग
गुजरात – श्री. अमोलकभाई थिमाणी तथा श्री. ज्ञानचंद महाराज
आंध्र – श्री. माणिक्यराव तथा श्री प्रभाकरजी
कर्नाटक – श्री. एस. जगन्नाथन्जी तथा श्री दिवाकरजी
तमिलनाडु – श्री. एस. जगन्नाथन्जी, श्री. अरुणाचलम्जी तथा श्री. वरदन्
केरल – श्री. गोपीनाथन्जी, श्रीमती राजम्मा तथा श्री राधाकृष्ण मेनन
बंगाल – श्री. रा. कृ. पाटील

३) आर्थिक संयोजन के लिये श्री. तुलसीदासभाई विश्राम, श्री. राधाकृष्णजी बजाज, श्री. बिरदीचन्द चौधरी, श्री. नागरमलजी पेडीवाल की समिति बनायी गयी। आवश्यकतानुसार अन्य सदस्यों को इसमें जोडने का अधिकार दिया गया।

आर्थिक संयोजन के बारे में तय किया गया कि प्रदेशों ने अपने कार्यक्रमों के लिये स्थानीय साधनों से धन संग्रह करना चाहिये। आवश्यकता पडने पर प्रमुख कार्यकर्ता प्रदेश में आमंत्रित कर यह कार्य किया जाय।

४) साहित्य निर्माण के लिये निम्न व्यक्तियों की समिति बनायी गयी –
श्री. देवेन्द्रभाई (संयोजक), श्री. नलिनभाई मेहता, श्री. प्रवीणाबहन, श्री. ठाकुरदासजी बंग तथा श्री. नारायण जाजू

५) अभियान समिति का कार्यभार तथा केन्द्रीय दफ्तर का संयोजन करने के लिये श्री. दत्तोबा दास्ताने को मंत्री बनाया गया।

गोसंस्कृति का संरक्षण हमारा लक्ष्य

बैठक का समारोप करते हुये गोहत्या-बंदी अभियान समिति के उपाध्यक्ष श्री रा० कृ० पाटील ने कहा कि पू. विनोबाजी ने आज विनोद में बहुत बडी बात कही कि अपने वारिस तैयार करें। याने हमें नयी पीढी को अपने विचार ठीक से समझाने चाहिये। हर जमाने के श्रद्धास्थान विभिन्न होते हैं। एक जमाना था जब ऋषिमुनियों के एवं शास्त्र-वचनों को जनमानस प्रमाण मानता

था। आज का जमाना सायन्स का है। नओ पीढी को सायन्स की भाषा में समझाना होगा। अंडे या मांस के मुकाबले गोदूध से मनुष्य को ५ गुना पोषण (कॅलरीज) मिल सकता है, गोबर से भूमि अधिक उपजाऊ हो सकती है, गोमूत्र में औषधि तत्त्व है, बैलों से ३० हजार मेगावाट विद्युत शक्ति मिल रही है, कृषि-गोपालन का उत्पादन करीब १५ हजार करोड है। जो देश की कुल इंडस्ट्री तथा अन्य उत्पादन से अधिक हैं, आदि बातें कही जायें तो वे नओ पीढी की समझ में आ सकती है।

अभियान-समिति की ओर से अभी तक जितने कार्य हुओ उस पर से स्पष्ट है कि गायों को केरल और बंगाल जाने से रोकने का काम अधिक परिणाम-कारक रहा। गायें रोकने के काम को सारे देश में बडे पैमाने पर चलाना होगा। उसीसे गायें भी बचेंगी, और जनजागृती भी होगी। गायें रोकने का परिणाम बंगाल-केरल पर तो होगा हा, दिल्ली पर भी उसका परिणाम होगा। गोरक्षा का प्रश्न केवल गाय की रक्षा का ही प्रश्न नहीं है, भारतीय संस्कृति की रक्षा का प्रश्न है। अभी दिल्ली में जो अभियान समिति बनी, उसने अपना नाम गोरक्षा अभियान समिति न रखकर गोसंस्कृति अभियान समिति रखा है। याने इस अभियान में गोरक्षा के साथ कुल ग्रामीण संस्कृति का, याने गोप्रधान संस्कृति का पुनर्जीवन करना होगा। गोरक्षा के साथ-साथ खेती, ग्रामोद्योग, खादी, शराबबन्दी, शिक्षा आदि ग्रामोत्थान के सभी कार्यों को लेना होगा।

विनोबाजी का उपवास छूटने से हमारी चिंता कम हुओ है, लेकिन काम की जिम्मेवारी बढी है। हमें घर-घर, गांव-गांव पहुंचकर गोरक्षा एवं ग्रामोत्थान की बातें समझानी होंगी। जनता को जागृत करना होगा, ताकि वे अपने संसद-सदस्यों एवं विधायकों को समझावें कि गोरक्षा बिल का समर्थन करें। वे जनप्रतिनिधि हैं। जनता ने उन्हें चुनकर भेजा है। जनता गोहत्या बंद करना चाहती है, इसलिये उनका कर्तव्य है कि वे संविधान संशोधन एवं केन्द्रीय गोवध कानून का समर्थन करें।

अंत में दत्तपुर कुष्ठधाम के संचालक डॉ. रविशंकर शर्मा अेवं साथियों को अतिथियों की उत्तम व्यवस्था के लिये धन्यवाद दिया।

वर्धा, १०-६-७९

गौ बचाओ, गौ बचाओ

गौ बचाओ गौ बचाओ
बाजी अपनी जां की लगाओ।

जो माता है सबकी माता,
तेरी माता, मेरी माता,
मां के धर्म को भूल न जाओ।

सेवा करती रहती निस दिन,
मां जैसा ममता का जीवन
ऐसे प्रानी के गुन गाओ।

था जिसका रखपाल गोपाला,
वृंदावन का वह नंदलाला
महिमा उसकी बिसारि न पाओ।

कामधेनु यह भोली-भाली,
चार पदार्थ देनेवाली,
ऐसी कपिला को न गंवाओ।

गोहत्या है मां की हत्या,
पाप बडा है जिसकी हत्या,
ऐसे कुकर्म से बाज आओ।

कुलमाता गइया को देखो,
हाथ कसाई के मत बेचो,
उन्हें बचा कर पुण्य कमाओ।

— दुखायल

CHRISTIANITY AND COW SLAUGHTER

Dr. P. Lourdes

The subject 'Ban on cow slaughter' is a big subject, which every Indian, irrespective of his/her religion, should understand and co-operate. Christ Loved most cows and cattle. These animals deserve symphathy and they should be saved from slaughter-house. They must have natural death.

The Holy Bible reads as under :—

The Gospel of Saint Luke Chapter 2 : 7 "and she brought forth first born son and wrapped him in swaddling clothes and laid him in a manger because there was no room for them in the inn."

True christians should learn many lessons from the above passage. The son of God Jesus Christ, who started the Christianity was born in a cattle shed in the midst of cows and cattle, thereby teaching us that he liked most this perticular animal above all their animals. It tells us also that the human-being should pay the maximum respect and honour to the cows and cattle which from back-bone for the living of the human beings.

People who really love Jesus Christ should not kill these animals and they should not eat BEEF at all.

The Christian missionaries can establish "Cow orphanage" here and there in India and thereby save about 2000 to 3000 cows from being slaughtered.

There are about one thousand Christian churches in India. In front of every Church, there should be a cattle shed, with 2 or 3 cows and a small statue of infant Jesus to commemorate the humble birth of Jesus Christ. Thereby saving of about 2000 or 3000 cows from the slaughter house.

अंतिम अभिलाषा

मेरी मृत्यु तिथि अलग से न मनायी जाय। ११ फरवरी ही जिस दिन पूज्य जमनालालजी की मृत्यु हुई मेरी तिथि (में) संयुक्त रूप से मनाई जाय। जिस तरह मैं जीवन भर समा[ई] रही, उसी तरह मेरे अंतिम अवशेष और मेरी सारी स्मृति स्मारक भी उन्हींमें समाया रहे यह मेरी अंतिम अभिलाषा है।

मेरी भस्मी लोकप्रथा के अनुसार संगम (प्रयाग) या हरिद्वार आदि तीर्थों में ले जाने की आवश्यकता नहीं है। मेरे लिए गोपुरी ही सबसे बडा तीर्थ है। जहां गोमाता की सेवा करते हुए स्वयं जमनालालजी चिरनिद्रा में सो रहे हैं, वही मेरे लिए पुण्यधाम है।

जानकीदेवी बजाज

बुक-पोस्ट

६२८८

श्री सञ्चालक - घर ५६/८
नारियल बाज़ार
वाराणसी - 1
(उ.प्र.)

प्रेषक : 'गोग्रास' गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र)